International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 15 Issue 9 || September 2026 || PP. 50-62

प्रकृति, सृजन और सह-अस्तित्व का समन्वय: समकालीन शिक्षा में रवींद्रनाथ टैगोर के दर्शन की प्रासंगिकता और कार्यान्वयन की चुनौतियाँ

गोमती [1], रशीद अहमद [2]

1. *सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली*
2. *सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय केंद्र, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल*

सारांश (Abstract)

यह शोध-पत्र रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा शिक्षा में स्वतंत्रता, सृजनात्मकता, आत्म-अभिव्यक्ति तथा शिक्षक–विद्यार्थी संबंधों के महत्व पर दिए गए विशेष बल को रेखांकित करता है। टैगोर का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान अथवा परीक्षा-केन्द्रित अधिगम तक सीमित नहीं होनी चाहिए।

इक्कीसवीं शताब्दी में उनके शैक्षिक विचारों को व्यवहार में लाना केवल औपचारिक प्रयासों - जैसे किसी कंक्रीट परिसर में कुछ वृक्ष लगा देने - भर से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए शिक्षण - पद्धतियों (Pedagogical Practices) में मूलभूत परिवर्तन आवश्यक है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अनेक चुनौतियों से जूझ रही है, जैसे परीक्षाओं पर अत्यधिक बल, रटने की प्रवृत्ति, विद्यार्थियों में तनाव, तथा सृजनात्मकता एवं नैतिक मूल्यों की उपेक्षा। यह लेख टैगोर के शैक्षिक दर्शन के छह प्रमुख सिद्धान्तों की चर्चा करता है तथा यह बताता है कि इन्हें वर्तमान परिस्थितियों में किस प्रकार अपनाया जा सकता है।

तेजी से बदलते तथा प्रौद्योगिकी-केंद्रित समाज में भी टैगोर के शैक्षिक दृष्टिकोण के मूल सिद्धान्त आज अत्यंत प्रासंगिक हैं। साथ ही, यह लेख इन सिद्धान्तों को व्यवहार में लागू करने के दौरान आने वाली प्रमुख चुनौतियों का भी विश्लेषण करता है।

1. भूमिका (Introduction)

मानकीकृत परीक्षाओं (Standardised Testing), डिजिटल माध्यमों पर बढ़ती निर्भरता, एल्गोरिद्म-आधारित शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म, रोजगार-केंद्रित शिक्षा तथा विश्वव्यापी युवा मानसिक स्वास्थ्य संकट के इस युग में रवीन्द्रनाथ टैगोर का एक शताब्दी पूर्व प्रतिपादित शैक्षिक दृष्टिकोण एक गहन मानवीय एवं परिवर्तनकारी विकल्प प्रस्तुत करता है।

उनकी शिक्षा-दृष्टि स्वतंत्रता, सृजनात्मकता, समग्र विकास तथा प्रकृति के साथ जीवंत संबंध पर आधारित है, जो इक्कीसवीं शताब्दी की अनेक शैक्षिक समस्याओं का सीधा समाधान प्रस्तुत करती है। टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास तथा उसके जीवन में सामंजस्य स्थापित करना है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था प्रायः निम्न प्रवृत्तियों से प्रभावित दिखाई देती है-

- रटकर याद करना,
- अत्यधिक प्रतिस्पर्धा,
- मानकीकृत परीक्षाएँ,
- तथा प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता।

ऐसा वातावरण विद्यार्थियों में परीक्षा-भय, शैक्षणिक तनाव तथा अंकों की निरंतर दौड़ को जन्म देता है। यह स्थिति औपनिवेशिक काल के "कारखाना मॉडल" (Factory Model) शिक्षा की याद दिलाती है।

इसके अतिरिक्त वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्यतः निम्न स्तरीय संज्ञानात्मक क्षमताओं—जैसे स्मरण (Memorisation) एवं समझ (Understanding)—पर बल देती है, जबकि विश्लेषण (Analysis), संश्लेषण (Synthesis) तथा मूल्यांकन (Evaluation) जैसी उच्च स्तरीय बौद्धिक क्षमतियों की अपेक्षाकृत उपेक्षा करती है।

स्वयं बाल्यकाल में कक्षाबंद, निरानंद शिक्षा (Joyless Education) का दंश झेल चुके टैगोर ने स्कूल को 'कारागृह' जैसा अनुभव किया था (टैगोर, 1917) । टैगोर ने ऐसी शिक्षा-दृष्टि प्रस्तुत की जिसने केवल पाठ्यक्रम का ही उपनिवेशमुक्तिकरण (Decolonisation) नहीं किया, बल्कि मनुष्य के विचारों और चेतना को भी स्वतंत्र बनाने का प्रयास किया। उनका दर्शन आज भी भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) सहित समकालीन शैक्षिक सुधारों की एक महत्वपूर्ण आधारशिला माना जाता है।

एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था के प्रखर आलोचक थे। उन्होंने उस शिक्षा प्रणाली का विरोध किया जो "एक ही आकार का जूता सबके लिए उपयुक्त है" जैसी सोच पर आधारित थी।

उन्होंने औपनिवेशिक शिक्षा को "ज्ञान का कारखाना" (Knowledge Factory) कहा, जहाँ विद्यार्थियों को केवल निर्धारित साँचे में ढाला जाता था (टैगोर, 1917) । किंतु उन्होंने केवल आलोचना ही नहीं की, बल्कि शांतिनिकेतन की स्थापना कर यह सिद्ध किया कि शिक्षा मनुष्य की सृजनात्मक एवं रचनात्मक शक्तियों का आनंदपूर्ण विकास करने वाली प्रक्रिया हो सकती है।

यह शोध-पत्र टैगोर के शैक्षिक दर्शन की मूलभूत अवधारणाओं की विवेचना करता है और समकालीन शैक्षिक आवश्यकताओं, जैसे कि आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, पर्यावरणीय चेतना और सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा, के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करता है।

2. टैगोर की शिक्षा-दृष्टि की मूल अवधारणा: शिक्षा ही जीवन है (The Core Concept of Tagore's Vision: Education as Life)

टैगोर की शिक्षा-दृष्टि औपनिवेशिक, कारखाना मॉडल तथा परीक्षा-केंद्रित शिक्षा प्रणाली की प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुई। औपनिवेशिक शासन दमन एवं शोषण पर आधारित था, और उसकी शिक्षा व्यवस्था का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना था जो रंग और वंश से भारतीय हों, किन्तु विचार, मानसिकता और आत्मा से ब्रिटिश हों (मैकाले, 1835) ।

यह शिक्षा व्यवस्था अत्यधिक यांत्रिक एवं परीक्षा-उन्मुख थी। टैगोर के शैक्षिक विचार इस पूरी व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत थे (घोष एवं यादव, 2002) । उनके अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य शिक्षार्थियों को हर प्रकार के दमन एवं शोषण से मुक्त करना है।

इस संदर्भ में टैगोर लिखते हैं -

"शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान की समृद्धि द्वारा स्वयं को समृद्ध बनाना नहीं है, बल्कि मनुष्य और मनुष्य के बीच प्रेम तथा मैत्री का संबंध स्थापित करना भी है।"

इसी कारण टैगोर का शैक्षिक दृष्टिकोण मूलतः मानवतावादी (Humanistic) था, जिसमें प्रकृतिवाद (Naturalism), मानवतावाद (Humanism), आदर्शवाद (Idealism) तथा सार्वभौमिकता (Universalism) का समन्वय मिलता है (शर्मा,2023; दास,2022) ।

प्राकृतिक जुड़ाव (Natural Connection)

उन्होंने बालक के समग्र विकास पर बल दिया, जिसमें संज्ञानात्मक (Cognitive), भावात्मक Affective), तथा मनोदैहिक (Psychomotor) - तीनों क्षेत्रों का संतुलित विकास आवश्यक माना। उनके अनुसार एक पूर्ण व्यक्तित्व इन्हीं तीनों आयामों के समन्वित विकास से निर्मित होता है। यदि इनमें से किसी एक का भी विकास न हो, तो व्यक्ति का समग्र विकास संभव नहीं है। टैगोर ने पारम्परिक शिक्षा व्यवस्था अथवा "कारखाना मॉडल" (Factory Model) का स्पष्ट रूप से विरोध किया (टैगोर,1917)। क्यूंकि जैसे फैक्ट्री से एक ही तरह का सामान निकलता है, ठीक उसी तरह हमारी शिक्षा व्यवस्था है, जहाँ पर विभिन्न प्रकार के छात्रों को एक ही सांचे में ढाल दिए जाता है। इसी तरह वो अपनी किताब "टवर्ड्स यूनिवर्सल मैन" (Towards Universal Man) में टैगोर लिखते हैं कि यूरोपीय तर्ज़ पर बने बोर्डिंग स्कूल इंसानी विकास को बढ़ावा देने वाली जगहों के बजाय "आर्मी बैरक, पागलखाने, अस्पताल और जेल" जैसे लगते हैं (टैगोर,1961)। ऐसी शिक्षा विद्यार्थियों को उनकी प्रकृति, समुदाय तथा स्वाभाविक जिज्ञासा से दूर कर देती है।

इसके विपरीत टैगोर का विश्वास था कि शिक्षा विद्यार्थी, समाज और प्रकृति के बीच निरन्तर संवाद की प्रक्रिया है। इन तीनों के बीच सतत अन्तःक्रिया होनी चाहिए। विद्यार्थी समाज और प्रकृति को समझें, उनसे जुड़े और उनके साथ मिलकर जीवन जीना सीखें। यही वास्तविक शिक्षा है।

उनके अनुसार विद्यार्थी जिस प्रकार समाज एवं प्रकृति के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है, वही उसके वास्तविक अधिगम(Learning) का दर्पण है। ऐसी शिक्षा विद्यार्थियों को सौन्दर्य (Beauty), सत्य (Truth), तथा सामाजिक उत्तरदायित्व (Responsibility) का बोध कराती है।

टैगोर के अनुसार आदर्श कक्षा चार दीवारों से घिरा हुआ कमरा नहीं है, बल्कि ऐसा शिक्षण वातावरण है जहाँ ऋतुएँ, प्रकृति, कला, भाषा और जीवन के वास्तविक अनुभव स्वयं पाठ्यक्रम का हिस्सा बन जाएँ (टैगोर,2017)। शिक्षा का उद्देश्य मन की मुक्ति है, और शिक्षा की प्रक्रिया आनंदमय होनी चाहिए। इस तरह की शिक्षा आंतरिक प्रेरणा से ही हासिल की है। आंतरिक प्रेरणा छात्रों में जीवन भर सीखने की प्रवृत्ति को मज़बूत करती है, जोकी 'सतत विकास लक्ष्यों' (Sustainable Development Goals, SDGs) का एक मुख्य उद्देश्य है (यूनेस्को, 2021)।

टैगोर के अनुसार आदर्श कक्षा चार दीवारों में सीमित बंद कमरा नहीं है, बल्कि ऐसा शिक्षण परिवेश है जहाँ ऋतुएँ, कला, भाषा तथा जीवन के वास्तविक अनुभव स्वयं पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बन जाते हैं (मुखर्जी, 2026; बनर्जी,2025; दत्ता, एवं बोरा, 2025)। टैगोर ने प्रकृति एवं पर्यावरण को शिक्षा का अनिवार्य अंग माना। उनके अनुसार बच्चे -

- पेड़-पौधों,
- फूलों,
- मिट्टी,
- जल,
- पक्षियों,
- तथा प्राकृतिक परिवेश

के सम्पर्क में आकर अपनी इन्द्रियों का विकास करते हैं। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों और प्रकृति के बीच घनिष्ठ एवं सजीव सम्बन्ध स्थापित करना होना चाहिए।

टैगोर के अनुसार -

"ऐसी संस्था में जहाँ शिक्षा का प्रथम महान् पाठ मनुष्य और प्रकृति के पूर्ण सामंजस्य की स्थापना हो— जो केवल प्रेम के माध्यम से ही नहीं, बल्कि सक्रिय संवाद और सहभागिता के माध्यम से भी साकार हो— वहीं वास्तविक शिक्षा का आरम्भ होता है।"

टैगोर ने शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रखा। उनके अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार (Self-realisation) है (बनर्जी, 2025; दास,2022)। उनका विश्वास था कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक सार्वभौमिक आत्मा (Universal Soul) विद्यमान है और शिक्षा का उद्देश्य उस आत्मा का अनुभव कराना है, और इस अवस्था को प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है।

टैगोर के अनुसार -

"सत्य वह अनन्त है जिसकी खोज विज्ञान करता है, जबकि वास्तविकता उस अनन्त की ऐसी व्याख्या है जो सत्य को मनुष्य के जीवन से जोड़ती है।"

(Mishra, 2015)

टैगोर का यह भी विश्वास था कि प्रत्येक बालक जन्मजात रूप से जिज्ञासु, सृजनशील तथा कल्पनाशील होता है। इसलिए शिक्षा का कार्य उसकी अंतर्निहित क्षमताओं का विकास करना है, न कि उन्हें दबाना। इसी उद्देश्य से टैगोर ने शांतिनिकेतन विद्यालय (1901) तथा विश्वभारती विश्वविद्यालय (1921) की स्थापना पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन में की।

इन संस्थानों में उन्होंने बिना बाहरी हस्तक्षेप के अपने शैक्षिक विचारों का व्यवहारिक प्रयोग किया।

उन्होंने शिक्षा को "पिंजरे जैसी पारम्परिक कक्षा" से बाहर निकालकर एक ऐसे वैकल्पिक मॉडल में परिवर्तित किया जो -

- प्रकृति,
- मानवतावाद,
- अन्तरराष्ट्रीयता,
- कला,
- सृजनात्मकता,
- बालकेन्द्रित शिक्षा,
- समावेशिता,
- तथा ग्रामीण विकास

पर आधारित था।

शांतिनिकेतन का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं था, बल्कि विद्यार्थियों में सम्मान, आनन्द, स्वतंत्रता तथा वैश्विक मानवीय दृष्टिकोण का विकास करना था (बनर्जी, 2025; दास,2022)

3. टैगोर की सम्पूर्ण शिक्षा-दृष्टि छः प्रमुख सिद्धान्त

टैगोर की सम्पूर्ण शिक्षा-दृष्टि निम्नलिखित छः प्रमुख सिद्धान्तों पर आधारित है।

सिद्धान्त1: प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण शिक्षा (Education in Harmony with Nature)

टैगोर का मानना था कि प्रकृति बच्चों की सर्वोत्तम शिक्षिका है। इसी कारण उन्होंने शिक्षा को प्राकृतिक वातावरण संपन्न करने पर विशेष बल दिया।

टैगोर अनुसार -

हम सभी जानते हैं कि बच्चों को धूल-मिट्टी बहुत पसंद होती है; फूलों की तरह ही उनका तन-मन धूप और हवा के लिए तरसता है। ब्रह्मांड से उन्हें सीधे जुड़ाव के लिए जो लगातार निमंत्रण मिलते रहते हैं, उन्हें ठुकराने का उनका कभी मन नहीं करता।

(टैगोर,1917)

उनके अनुसार शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को आत्मसात करना चाहिए तथा उसे प्रकृति और समाज के साथ अपने व्यवहार में प्रयोग करना चाहिए। टैगोर चार दीवारों में सीमित कक्षा के पक्षधर नहीं थे। उनका मानना था कि वास्तविक शिक्षा खुले वातावरण में ही संभव है। उन्होंने कहा—

"हमारी वास्तविक शिक्षा केवल जंगलों में, प्रकृति के साथ घनिष्ठ सम्पर्क तथा अनुशासित जीवन के माध्यम से ही सम्भव है।"

उनके अनुसार ऐसा वातावरण विद्यार्थियों में प्रकृति के साथ एकात्मता (Oneness with Nature) की भावना विकसित करता है। अतः हम कह सकते हैं कि टैगोर के लिए शिक्षा की सबसे बड़ी प्रयोगशाला खुला आकाश और प्रकृति थी। टैगोर ने इस सिद्धान्त को केवल सिद्धान्त रूप में नहीं छोड़ा बल्कि उसे व्यवहार में लागू भी किया। शांतिनिकेतन की स्थापना का मूल विचार ही चारदीवारी से मुक्ति था। उनका मानना था कि वृक्षों के नीचे कक्षाएँ बच्चे को ब्रह्मांड से जुड़ाव का बोध कराती हैं। यह केवल रोमांटिक सौंदर्यबोध नहीं था; यह पारिस्थितिक चेतना (Ecological Consciousness) का प्रारंभिक प्रतिमान था, जहाँ शिक्षार्थी यह समझता है कि वह प्रकृति से पृथक नहीं, बल्कि उसी का एक भाग है।

शांतिनिकेतन में -

- विद्यार्थी पेड़ों के नीचे बैठकर अध्ययन करते थे।
- अधिकांश कक्षाएँ खुले वातावरण में आयोजित होती थीं।
- प्राकृतिक परिवेश स्वयं शिक्षण का माध्यम बनता था।
- विद्यार्थी प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से सीखते थे।
- प्रकृति केवल अध्ययन का विषय नहीं थी, बल्कि सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया की सक्रिय सहभागी थी।

इस प्रकार टैगोर ने शिक्षा को पुस्तक-केंद्रित व्यवस्था से निकालकर जीवन, प्रकृति और अनुभव-केंद्रित प्रक्रिया बना दिया।

इस सिद्धान्त के अनुसार

1. प्रकृति सर्वोत्तम शिक्षिका है।
2. शिक्षा खुले एवं प्राकृतिक वातावरण में होनी चाहिए।
3. विद्यार्थी का प्रकृति से जीवंत सम्बन्ध स्थापित होना चाहिए।
4. सांस्कृतिक विरासत और प्रकृति का समन्वय शिक्षा का आधार होना चाहिए।
5. प्रत्यक्ष अनुभव पुस्तकीय ज्ञान से अधिक प्रभावी होते हैं।
6. शांतिनिकेतन इस सिद्धान्त का सफल व्यवहारिक उदाहरण है।

सिद्धांत 2: बालक का समग्र विकास

पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में बालक के समग्र विकास को मुख्यतः दो रूपों में देखा जाता है—शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक। हालांकि, बालक के समग्र विकास के संबंध में रवीन्द्रनाथ टैगोर के विचार इस पारंपरिक विभाजन से भिन्न थे। उनका मानना था कि बालक के समग्र विकास में बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक, सौंदर्यात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक सभी आयाम शामिल होने चाहिए। उनका यह भी मानना था कि चित्रकारी, लोकगीत सीखना, बागवानी तथा कक्षा में वाद-विवाद एवं चर्चा जैसी गतिविधियाँ पाठ्येतर गतिविधियाँ नहीं हैं, बल्कि संज्ञानात्मक विकास के आवश्यक अंग हैं। ये गतिविधियाँ रटकर याद करने के बजाय संगीत, नृत्य, नाटक और ललित कलाओं के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति द्वारा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत प्रतिभाओं का विकास करती हैं।

इस प्रकार, बालक के समग्र विकास को तीन प्रमुख समूहों में विभाजित किया जा सकता है:

- भावनात्मक एवं सौंदर्यात्मक गतिविधियाँ: नृत्य, संगीत, ललित कला, नाटक आदि समग्र विकास के अभिन्न अंग हैं। ये विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं में मानवीय संवेदनाओं का विकास करती हैं। टैगोर का मानना था कि कलाएँ शिक्षार्थियों में सहानुभूति और सौंदर्य-बोध का विकास करती हैं। यदि कोई बालक केवल संज्ञानात्मक गतिविधियों में ही संलग्न रहता है, तो उनमें सहानुभूति और सौंदर्य-बोध का पर्याप्त विकास नहीं हो सकता (घोष एवं यादव, 2025)।
- शारीरिक गतिविधियाँ: टैगोर का मानना था कि शारीरिक गतिविधियाँ समग्र विकास का अनिवार्य हिस्सा हैं। उनके अनुसार स्वस्थ और सुदृढ़ शरीर सभी प्रकार के अधिगम का आधार है।
- आध्यात्मिकता: टैगोर का शैक्षिक दर्शन उपनिषदों से अत्यधिक प्रभावित था। आत्म-साक्षात्कार उनके शैक्षिक दर्शन के महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक था। शिक्षा को आत्म और सार्वभौमिक आत्मा के एकत्व की आध्यात्मिक प्रक्रिया को विकसित करना चाहिए, करुणा का विकास करना चाहिए तथा अस्तित्व के साथ रचनात्मक और आनंदपूर्ण संबंध स्थापित करने में सहायता करनी चाहिए (दत्ता एवं बोरा, 2025)।

टैगोर का दृढ़ विश्वास था कि ये सभी गतिविधियाँ बालक के समग्र विकास के अभिन्न अंग हैं। उन्होंने शिक्षा के विशुद्ध औद्योगिक अथवा व्यावसायिक मॉडल को अस्वीकार किया। उनके लिए शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण एवं समग्र विकास था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में भी इसी प्रकार की समग्र दृष्टि को अपनाया गया है। इसमें शिक्षा के माध्यम से संज्ञानात्मक कौशल, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, नैतिक तर्क, रचनात्मकता, संचार, सहयोग तथा जीवन-कौशल के विकास पर बल दिया गया है।

सिद्धांत 3: अधिगम में स्वतंत्रता और आनंद

औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः शिक्षक-केंद्रित तथा रटकर सीखने की पद्धति पर आधारित थी। टैगोर का मानना था कि अधिगम ऐसे वातावरण में होना चाहिए जहाँ विद्यार्थी स्वतंत्रता का अनुभव करें, आनंद प्राप्त करें और बिना किसी संकोच के स्वयं को अभिव्यक्त कर सकें।

टैगोर के लिए स्वतंत्रता विकास की कुंजी थी। उनका तर्क था कि स्वतंत्रता की उपस्थिति में ही शिक्षा को उसका अर्थ और औचित्य प्राप्त होता है (टैगोर,1917)। यहाँ स्वतंत्रता से उनका आशय रटकर सीखने से मुक्ति, परीक्षा के भय से मुक्ति तथा अपनी रुचियों को अपनी गति से खोजने और विकसित करने की स्वतंत्रता से था।

यह स्वतंत्रता किसी प्रकार की निरंकुशता या अनुशासनहीनता की अनुमति नहीं है, बल्कि यह रचनात्मक आत्म-अभिव्यक्ति, स्वतंत्र खोज, जिज्ञासा, अन्वेषण और विश्व के साथ सक्रिय सहभागिता के लिए आवश्यक अवसर प्रदान करती है। यह उस कठोर पाठ्यचर्या के विपरीत है जो बच्चों को केवल निष्क्रिय ज्ञान-ग्राही मानती है, जबकि टैगोर उन्हें अपने संसार और अपने भविष्य के सक्रिय निर्माता के रूप में देखते थे।

NEP 2020 भी पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु को कम करने, विषयों के चयन में लचीलापन प्रदान करने, बहुविषयक अधिगम को बढ़ावा देने तथा रटकर सीखने पर कम जोर देने की बात करती है। ये सभी प्रयास शैक्षणिक तनाव को कम करने और अर्थपूर्ण अधिगम को बढ़ाने में सहायक हैं तथा विद्यार्थियों में आनंदपूर्ण अधिगम (Joyful Learning) को बढ़ावा देते हैं।

सिद्धान्त 4: अन्तरराष्ट्रीयता एवं सार्वभौमिक मानवतावाद (Internationalism and Universal Humanism)

टैगोर का दृष्टिकोण संकुचित राष्ट्रवाद से परे था। वो मानवता की एकता में विश्वास करते थे। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल किसी राष्ट्र के नागरिक तैयार करना नहीं है, बल्कि ऐसे विश्व-नागरिक (Global Citizens) तैयार करना है जो जाति, धर्म,

भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय सीमाओं से ऊपर उठकर सम्पूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में देखें (चक्रवर्ती, एवं पात्रा, 2025; दास,2022) ।

टैगोर संकीर्ण राष्ट्रवाद के समर्थक नहीं थे। उनका विश्वास था कि प्रत्येक संस्कृति का अपना विशिष्ट योगदान है और शिक्षा का कार्य इन विविध संस्कृतियों के बीच संवाद, सहयोग तथा पारस्परिक सम्मान स्थापित करना है।

इसी उद्देश्य से उन्होंने विश्वभारती विश्वविद्यालय की स्थापना की। इसका आदर्श वाक्य है—

"यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्"
(जहाँ सम्पूर्ण विश्व एक ही नीड़ अर्थात् एक ही घर बन जाता है।)

यह केवल एक आदर्श वाक्य नहीं था, बल्कि टैगोर की सम्पूर्ण शिक्षा-दृष्टि का आधार था।

विश्वभारती में उन्होंने पूर्वी एवं पाश्चात्य संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि विभिन्न सभ्यताओं से सीखकर ही मनुष्य का दृष्टिकोण व्यापक बन सकता है। उन्होंने इस विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था को तीन प्रमुख आधारों पर निर्मित किया—

- सृजनात्मकता (Creativity)
- कल्पनाशक्ति (Imagination)
- आलोचनात्मक चिन्तन (Critical Thinking)

अतः, तेजी से वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों से भरी आज की दुनिया में, वैश्विक नागरिकता को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक हो गया है। टैगोर का अन्तरराष्ट्रीयता एवं सार्वभौमिक मानवतावाद, अलग-अलग सांस्कृतिक बैकग्राउंड वाले लोगों के साथ असरदार ढंग से बातचीत करने और मिलकर काम करने की क्षमता—यानी इंटरकल्चरल कॉम्पिटेंस—को बढ़ावा देना; और जलवायु परिवर्तन, गरीबी और सामाजिक अन्याय जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए ज़िम्मेदारी की भावना पैदा करता है (बारीक, 2024) ।

सिद्धान्त 5: करके सीखना (Learning by Doing)

टैगोर का दृढ़ विश्वास था कि ज्ञान तभी सार्थक है जब उसका सम्बन्ध वास्तविक जीवन, संस्कृति और प्रकृति से हो। उन्होंने रटकर सीखने (Rote Memorisation) का तीव्र विरोध किया और "करके सीखने" (Learning by Doing) को शिक्षा का मूल आधार माना। उनकी शिक्षण-दृष्टि अनुभव-आधारित अधिगम पर आधारित थी, जिसमें ह्यूरिस्टिक (Heuristic) विधि तथा अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) को विशेष महत्व दिया गया।

उनके अनुसार विद्यार्थी केवल पढ़कर नहीं, बल्कि—

- स्वयं कार्य करके,
- अनुभव प्राप्त करके,
- समस्याओं का समाधान खोजकर,
- तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में भाग लेकर

सबसे अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं।

अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning**)**

टैगोर के शिक्षण में अनुभव को अत्यधिक महत्व प्राप्त था। अनुभवात्मक अधिगम के अंतर्गत विद्यार्थी हस्तगत गतिविधियों (Hands-on Activities), वाद-विवाद, चर्चा तथा वास्तविक जीवन से जुड़े परियोजना कार्यों के माध्यम से अवधारणाओं को गहराई से समझते हैं (दास, 2019) । यह दृष्टिकोण जॉन ड्यूई के उस सिद्धान्त से मेल खाता है, जिसके अनुसार अधिगम अनुभव और उस पर किए गए चिंतन (Reflection) के माध्यम से विकसित होता है।

वे चाहते थे कि विद्यार्थी -

- प्रयोग करें,
- अवलोकन करें,
- वाद-विवाद करें,
- परियोजनाएँ तैयार करें,
- तथा समाज की वास्तविक समस्याओं पर कार्य करें।

ऐसी प्रक्रिया से विद्यार्थियों में केवल तथ्यात्मक ज्ञान ही नहीं, बल्कि गहरी वैचारिक समझ विकसित होती है। यह दृष्टिकोण जॉन ड्यूई (John Dewey) के अनुभवात्मक अधिगम सिद्धान्त से भी मेल खाता है, जिसके अनुसार सीखना अनुभव तथा उस पर चिंतन (Reflection) करने की प्रक्रिया है।

शांतिनिकेतन में विद्यार्थी केवल कक्षा में बैठकर अध्ययन नहीं करते थे। वहाँ विद्यार्थी अपनी नियमित शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ कृषि कार्यों, सामुदायिक सेवा, ग्राम विकास, सामाजिक पुनर्निर्माण, तथा सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते थे (बनर्जी, 2020)। इन गतिविधियों को शिक्षा का अनिवार्य भाग माना जाता था। इस प्रकार शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहती थी, बल्कि जीवन और समाज से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ जाती थी। अतः "करके सीखना" (Learning by doing) शांतिनिकेतन की शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग था। आज के समय में टैगोर का यह सिद्धान्त अनेक आधुनिक शिक्षण पद्धतियों में दिखाई देता है, जैसे—

- परियोजना-आधारितअधिगम (Project-Based Learning)
- समस्या-समाधान आधारित अधिगम (Problem-Based Learning)
- अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning)
- अन्वेषण आधारित अधिगम (Inquiry-Based Learning)

इन सभी अधिगमों का उद्देश्य विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking), व्यावहारिक कौशल (Practical Competencies) तथा वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित करना है।

सिद्धान्त 6: सभी विषयों में कला का एकीकरण (Integration of Arts across All Subjects)

टैगोर ने कला को शिक्षा के केन्द्र में स्थान दिया। उनका मानना था कि संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला तथा साहित्य केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि ज्ञान प्राप्त करने, सोचने और स्वयं को अभिव्यक्त करने के प्रभावशाली माध्यम हैं।

उनके अनुसार किसी राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत उसकी कला में निहित होती है। इसलिए यदि शिक्षा में कला की उपेक्षा की जाती है, तो विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास सम्भव नहीं है (दास, 2019) ।

टैगोर के अनुसार कला विद्यार्थियों में—

- कल्पनाशक्ति,
- मौलिकता,
- भावनात्मक परिपक्वता,

- सौन्दर्यबोध,
- संवेदनशीलता,
- तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति, का विकास करती है।

इसी कारण उन्होंने संगीत, नाटक, चित्रकला, कविता एवं हस्तकला जैसी गतिविधियों को पाठ्यक्रम का अनिवार्य भाग बनाया।

वर्तमान समय में सृजनात्मकता (Creativity) तथा नवाचार (Innovation) को इक्कीसवीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण कौशलों में गिना जाता है। टैगोर का कला-समेकित दृष्टिकोण इन क्षमताओं के विकास में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। टैगोर की कला-एकीकृत शिक्षण पद्धति (Arts-Integrated Approach) विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति, भावनात्मक अभिव्यक्ति, मौलिक चिंतन तथा सृजनात्मक क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को अधिक जीवंत, संवेदनशील और अर्थपूर्ण बनाता है।

टैगोर द्वारा प्रतिपादित कला-एकीकरण की यही परंपरा आज STEAM (Science, Technology, Engineering, Arts and Mathematics) शिक्षा के रूप में विकसित हुई है। इस आधुनिक शैक्षिक दृष्टिकोण में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी और गणित के साथ कला का समन्वय किया जाता है, जिससे विद्यार्थियों को समग्र (Holistic), बहुविषयक (Interdisciplinary) तथा सृजनात्मक अधिगम वातावरण प्राप्त होता है। इस प्रकार STEAM शिक्षा न केवल वैज्ञानिक एवं तकनीकी दक्षताओं का विकास करती है, बल्कि विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच, समस्या-समाधान क्षमता तथा नवाचार की प्रवृत्ति को भी सशक्त बनाती है।

4. समकालीन शैक्षिक आवश्यकताएँ (Contemporary Educational Needs)

आज के आधुनिक और डिजिटल युग में शिक्षा क्षेत्र के समक्ष कई नई आवश्यकताएँ उभरी हैं:

- रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच **(Creativity and Critical Thinking):** ऑटोमेशन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में रटने की क्षमता निरर्थक हो गई है। अब समस्याओं के अभिनव समाधान खोजने और विश्लेषणात्मक चिंतन करने की आवश्यकता है। जब तक छात्र रचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक चिंतन पैदा नहीं करता है तो वो आज के दौर के प्रश्नो क प्रभावी अभिनव समाधान नहीं खोज सकता।

- मानसिक स्वास्थ्य एवं भावनात्मक कल्याण **(Mental Health and Emotional Wellbeing):** प्रतिस्पर्धी माहौल और अंक-केंद्रित मूल्यांकन के कारण विद्यार्थियों में तनाव, अवसाद और अलगाव बढ़ रहा है। इसलिए, शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों के सीखने की प्रकिर्या को सुखद, स्वतंत्र, एवं आत्म - अभिव्यक्ति से जोड़े।

- पर्यावरण संवेदनशीलता (Environmental **Sensitivity):** पर्यावरण प्रदूषण आधुनिक युग की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकीय संकट के दौर में पर्यावरण के प्रति संवेदनशील नागरिकों का निर्माण अत्यंत अनिवार्य हो गया है।

- मूल्य - आधारित शिक्षा एवं वैश्विक नागरिकता (Value-based education and global citizenship): आज के समय में लोगों के अंदर तकनीकी ज्ञान तो आ गया है, लेकिन वो मानवीय मूल्यों से खाली हो गए हैं। इसलिए शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो ऐसे मानव का विकास करे जो तकनीकी रूप से सक्षम लेकिन नैतिक रूप से संवेदनशील हो तथा समाज में मौजूद जो विविधता है वो उसका सम्मान करे। इसकी समझ नहीं बन पाती है।

- विखंडित ज्ञान (Fragmented **knowledge):** ज्ञान कृत्रिम विषय-विभाजनों में बँटा हुआ है, जिसमे छात्र कुछ गिने चुने विषयों का अध्ययन, पृथिक रूप से ही कर पाते हैं। इसका परिणाम ये होता है की छात्र के अंदर विभिन्न विषय आपस में कैसे जुड़े हुए हैं, इसकी समझ नहीं बन पाती है। अर्थात विद्यार्थी विश्व को एक अंतर्संबंधित समग्रता (Interconnected Whole) के रूप में नहीं देख पाते। परिणामस्वरूप उनकी शिक्षा और जीवन के बीच सामंजस्य नहीं बैठा है.

5. टैगोर के शैक्षिक दर्शन के कार्यान्वयन की प्रमुख चुनौतियाँ (Major Challenges in the Implementation of Tagore's Educational Philosophy)

यद्यपि रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन अत्यंत प्रेरणादायक, मानवीय तथा दूरदर्शी है, फिर भी वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में इसे पूर्ण रूप से लागू करना आसान नहीं है। सामाजिक, प्रशासनिक, आर्थिक तथा शैक्षिक स्तर पर अनेक बाधाएँ इसके प्रभावी कार्यान्वयन में अवरोध उत्पन्न करती हैं।

नीचे प्रमुख चुनौतियों का वर्णन किया गया है।

1. बड़ी कक्षाएँ (Large Class Size)

भारतीय विद्यालयों में अधिकांश कक्षाओं में विद्यार्थियों की संख्या बहुत अधिक होती है।

ऐसी स्थिति में -

- प्रत्येक विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान देना कठिन हो जाता है।
- विद्यार्थियों की रुचि एवं क्षमता के अनुसार शिक्षण संभव नहीं हो पाता।
- चर्चा, प्रयोग, परियोजना तथा अनुभवात्मक अधिगम जैसी गतिविधियों का प्रभावी संचालन कठिन हो जाता है।

सरकारी विद्यालय के शिक्षकों, जिनके पास 40-50 छात्र हों और उनको 40 मिनट की अवधि में एक निर्धारित पाठ्यक्रम पूरा करना हो, तो उनके लिए, वैयक्तिकृत Personalised) और प्रकृति-आधारित (Nature-based) शिक्षण लागू करना लगभग असंभव है। टैगोर की शिक्षा-दृष्टि व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा शिक्षक–विद्यार्थी के घनिष्ठ संबंध पर आधारित है, जिसको अत्यधिक भीड़ वाली कक्षाओं पर लागू कर पाना चुनौतीपूर्ण कार्य है।

2.परीक्षा केंद्रित शिक्षा व्यवस्था (Examination-Driven System)

भारत में अनेक शैक्षिक नीतियाँ विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा का समर्थन करती हैं, किन्तु व्यवहार में अधिकांश विद्यालय अभी भी परीक्षा एवं अंकों पर अत्यधिक निर्भर हैं। इस कारण -

- रचनात्मकता की उपेक्षा होती है।
- जिज्ञासा कम होती है।
- विद्यार्थी केवल परीक्षा पास करने के उद्देश्य से अध्ययन करते हैं।
- स्वतंत्र चिंतन और नवाचार को पर्याप्त अवसर नहीं मिलता।

अभिभावकों की अत्यधिक अपेक्षाएँ इस समस्या को और बढ़ा देती हैं। अधिकांश अभिभावक चाहते हैं कि बच्चे अपना अधिकांश समय परीक्षा की तैयारी में लगाएँ। परिणामस्वरूप विद्यार्थी कला, खेल, संगीत तथा अन्य सह-शैक्षणिक गतिविधियों से दूर हो जाते हैं।

3. संसाधनों का अभाव (Lack of Resources)

टैगोर की शिक्षा-दृष्टि के सफल कार्यान्वयन के लिए पर्याप्त भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। किन्तु भारत के अनेक ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में -

- खेल का मैदान नहीं है।
- बगीचे अथवा प्राकृतिक शिक्षण स्थल उपलब्ध नहीं हैं।
- प्रयोगात्मक शिक्षण के लिए आवश्यक संसाधनों का अभाव है।

- कला एवं संगीत की सुविधाएँ सीमित हैं।

इसी प्रकार प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। यदि शिक्षक अनुभवात्मक अधिगम, कला-समेकित शिक्षा तथा प्रकृति-आधारित शिक्षण में प्रशिक्षित नहीं होंगे, तो टैगोर के सिद्धान्तों का प्रभावी क्रियान्वयन संभव नहीं होगा।

4. प्रौद्योगिकी पर अत्यधिक निर्भरता (Technological Dependency)

समकालीन समाज में डिजिटल तकनीक का प्रभाव अत्यधिक बढ़ गया है। अनेक अध्ययन बताते हैं कि विद्यार्थी अपना अधिकांश अवकाश समय—

- मोबाइल फ़ोन,
- सोशल मीडिया,
- वीडियो प्लेटफ़ॉर्म,
- तथा अन्य डिजिटल उपकरणों,

पर व्यतीत करत हैं। इसका प्रभाव निम्न रूपों में दिखाई देता है -

- ध्यान की अवधि (Attention Span) का कम होना,
- गहन अध्ययन (Deep Learning) में गिरावट,
- तथा प्रकृति एवं समाज के बीच संपर्क में कमी।

टैगोर का मानना था कि वास्तविक शिक्षा प्रकृति और समाज के साथ जीवंत अनुभवों से प्राप्त होती है। इसलिए अत्यधिक तकनीकी निर्भरता उनके शैक्षिक दर्शन के लिए एक गंभीर चुनौती है। वर्तमान समय में डिजिटल अधिगम अनिवार्य होता जा रहा है, जबकि टैगोर की दृष्टि प्रकृति-संवाद पर केंद्रित है। दोनों के बीच संतुलन की सैद्धांतिक और व्यावहारिक कशमकश है, दोनों के बीच सामंजस्य बिठाना चुनौतीपूर्ण कार्य है ।

पूँजीवादी नियम और नौकरी बाजार का दबाव (Capitalist rules and job market pressures):

सबसे बड़ी चुनौती शिक्षा के उद्देश्य को लेकर वैचारिक टकराव है। वर्तमान प्रणाली शिक्षा को मुख्यतः आर्थिक उन्नति और 'रोजगारपरकता' (Employability) के एक साधन के रूप में देखती है। माता-पिता और नीति-निर्माता ऐसी शिक्षा चाहते हैं जो 'मापने योग्य' और 'बाजार में बेचने योग्य' कौशल दे। टैगोर का लक्ष्य मुक्त और पूर्ण मनुष्य बनाना था, न कि एक कुशल तकनीशियन। कला, संगीत और चिंतन से जुड़े पाठ्यक्रम को तब तक 'अनुत्पादक' ही माना जाएगा जब तक उनका आर्थिक मूल्यांकन नहीं होता।

6. निष्कर्ष (Conclusion)

रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार अपने समय से बहुत आगे थे। यद्यपि उनके शैक्षिक दर्शन की आलोचना यह कहकर की जा सकती है कि वह केवल एक आदर्शवादी अथवा कल्पनाशील स्वप्न है, किन्तु उन्होंने शांतिनिकेतन और विश्वभारती विश्वविद्यालय में अपने विचारों को व्यवहार में लागू करके यह सिद्ध कर दिया कि उनका शैक्षिक मॉडल औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली का एक यथार्थवादी, व्यावहारिक तथा अनुभव-सिद्ध (साक्ष्य-आधारित) विकल्प है। यह मॉडल पारम्परिक शिक्षण-केंद्रित, शिक्षक-प्रधान तथा पुस्तक एवं परीक्षा-केन्द्रित शिक्षा व्यवस्था से आगे बढ़ने का एक प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करता है।

यदि शिक्षक टैगोर के शैक्षिक दर्शन के कुछ मूलभूत सिद्धान्तों - जैसे स्वतंत्रता, प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण शिक्षण वातावरण, कला का समेकन, अनुभवात्मक अधिगम तथा सार्वभौमिक मानवीय समरसता को अपनाएँ, तो वे विद्यार्थियों के लिए अधिक आनंददायक, सार्थक तथा प्रभावी अधिगम वातावरण का निर्माण कर सकते हैं।

टैगोर ने लिखा है -

"किसी बालक को केवल अपने ज्ञान तक सीमित मत करो, क्योंकि उसका जन्म एक भिन्न समय के लिए हुआ है।"

आज का युग अनेक जटिल चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो नवाचारी, सृजनात्मक, सहानुभूतिपूर्ण तथा प्रकृति से जुड़ी हुई दृष्टि के साथ समस्याओं का समाधान कर सकें (चक्रवर्ती एवं पात्रा, 2025) । शांतिनिकेतन में व्यवहार में उतारे गए टैगोर के शैक्षिक विचार ऐसे व्यक्तित्वों के निर्माण के लिए केवल एक सैद्धान्तिक दर्शन ही नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक एवं कार्यक्षम रूपरेखा (Working Blueprint) भी प्रदान करते हैं।

टैगोर की शिक्षा-दृष्टि शिक्षकों को ऐसे शिक्षण वातावरण के निर्माण के लिए प्रेरित करती है जो आनंदमय, अर्थपूर्ण, सृजनात्मक तथा जीवन और प्रकृति से गहराई से जुड़ा हुआ हो (टैगोर,1961; टैगोर1917)। जॉन ड्यूई (John Dewey) तथा विलियम किलपैट्रिक (William Kilpatrick) ने भी इसी प्रकार के शैक्षिक दर्शन का समर्थन किया। उनका भी मत था कि शिक्षा का प्रकृति तथा वास्तविक जीवन से घनिष्ठ संबंध होना चाहिए और उसका उद्देश्य व्यावहारिक जीवनोपयोगिता की पूर्ति करना होना चाहिए। विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ अथवा जिनके माध्यम से वे समस्याओं का अध्ययन एवं समाधान करते हैं, वे सामाजिक तथा प्राकृतिक दृष्टि से उपयोगी होने के साथ-साथ उनके वास्तविक जीवन से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध होनी चाहिए।

टैगोर के शैक्षिक विचार इक्कीसवीं शताब्दी की आवश्यकताओं के अनुरूप एक अधिक मानवीय, संतुलित एवं समावेशी शिक्षा व्यवस्था के निर्माण का मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। तथापि यह स्मरण रखना आवश्यक है कि शांतिनिकेतन अथवा विश्वभारती की शिक्षा प्रणाली की हू-ब-हू नकल करना आवश्यक नहीं है। इसके स्थान पर हमें अपनी स्थानीय आवश्यकताओं, सामाजिक परिस्थितियों तथा शैक्षिक संदर्भों के अनुसार टैगोर के शैक्षिक दर्शन के श्रेष्ठ तत्वों को अपनाना चाहिए (घोष, एवं यादव, 2025;दास,2019)। इन मूलभूत तत्वों में विद्यार्थियों पर विश्वास करना, प्रकृति का सम्मान करना तथा वास्तविक एवं प्रामाणिक अधिगम (Authentic Learning) में आस्था रखना विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

समकालीन समय में विद्यार्थियों के समक्ष एक और गंभीर चुनौती तनाव (stress), चिंता (Anxiety), अभिभावकों का बढ़ता दबाव तथा तीव्र तकनीकी परिवर्तनों के कारण नैतिक चेतना में कमी के रूप में उपस्थित है। ऐसे समय में टैगोर के शैक्षिक दर्शन को अपनाना इन चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण, संतुलित और मानवीय विकास को सुनिश्चित करने में अत्यंत सहायक सिद्ध हो सकता है (घोष, एवं यादव, 2025; बारीक, 2024)

संदर्भ :

- बनर्जी, एस. (2020). *थ्री स्कूल्स इन बंगाल: रिवाइविंग टैगोर्स ओपन-एयर क्लासरूम.* द इंडियन एक्सप्रेस.
- बारीक, बी. बी. (2024). रिलेवेंस ऑफ रवींद्रनाथ टैगोर्स एजुकेशनल थॉट्स इन द प्रेजेंट-डे सिनेरियो. *ब्रेनवेव: ए मल्टीडिसिप्लिनरी जर्नल,* 5(2), 726–732.
- चक्रवर्ती, बी., एवं पात्रा, ए. (2025). व्यूपॉइंट ऑफ एनईपी 2020 एंड एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ रवींद्रनाथ टैगोर ऑन द टीचिंग-लर्निंग सिस्टम ऑफ सोसाइटी. *शोध पत्र,* 2(1), 37–46.
- दास, एस. (2019). रवींद्रनाथ टैगोर्स एजुकेशनल फिलॉसफी एंड इट्स रिलेवेंस टू कंटेम्परेरी एजुकेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड एजुकेशन एंड रिसर्च,* 4(3), 45–49.
- दास, एस. (2022). एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ रवींद्रनाथ टैगोर: कंट्रीब्यूशन टू इंडियन एजुकेशन. *आईजेएफएएनएस इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फूड एंड न्यूट्रिशनल साइंस,* 11(12), 8750–8756.
- दत्ता, एम., एवं बोरा, जी. (2025). रवींद्रनाथ टैगोर्स फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन: ए स्टडी. *द एकेडमिक,* 3(9), 435–440. https://theacademic.in/wp-content/uploads/2025/10/37-1.pdf
- एमएचआरडी. (2020). *नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन.* भारत सरकार.
- घोष, डी., एवं यादव, वी. के. (2025). ब्रिजिंग सेंचुरीज़: “कविगुरु” रवींद्रनाथ टैगोर्स एजुकेशनल फिलॉसफी एंड इट्स रेजोनेंस विद एनईपी 2020. *बीएसएसएस जर्नल ऑफ एजुकेशन,* 14(1), 1–12.

- गुप्ता, यू. डी. (2010). इन परस्यूट ऑफ ए डिफरेंट फ्रीडम: टैगोर्स वर्ल्ड यूनिवर्सिटी एट शांतिनिकेतन. *इंडिया इंटरनेशनल सेंटर क्वार्टरली*, 29(3/4), 25–38.
- मैकाले, टी. बी. (1835). *मैकालेज मिनट ऑन एजुकेशन*. इंटरनेट आर्काइव. https://dn760104.eu.archive.org/0/items/dli.csl.5518/5518.pdf
- मुखर्जी, आर. (2026). एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ रवींद्रनाथ टैगोर एंड इट्स रिलेवेंस टू द इंडियन एजुकेशन सिस्टम. *भारती इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट*, 4(1), 113–119.
- शर्मा, एस. (2023). रवींद्रनाथ टैगोर्स एजुकेशनल आइडियाज. *शोध ज्ञान*, 1(1), 46–57.
- शर्मा. (2024). रिविजिटिंग टैगोर्स एजुकेशनल आइडियल्स इन द 21स्ट सेंचुरी. *शोध पत्र*, 2(1).
- टैगोर, आर. (1961). *टुवर्ड्स यूनिवर्सल मैन*. एशिया पब्लिशिंग हाउस.
- टैगोर, आर. (2017). *माय स्कूल*. मैकमिलन.
- यूनेस्को. (2021). *विश्व-भारती यूनिवर्सिटी: यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज सेंटर*. https://whc.unesco.org/en/list/1566